AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

माओवाद व राज्य सरकार के मध्य संघर्ष : इंद्रावती राष्ट्रीय उद्यान (बीजापुर) के विशेष सन्दर्भ में

ORIGINAL ARTICLE

Authors

प्रो. गिरीश कांत पांडेय
प्राचार्य, शासकीय कोदूराम दलित महाविद्यालय,
नवागढ़, जिला बेमेतरा, छत्तीसगढ़, भारत

प्रो. प्रवीण कुमार कड़वे
विभागाध्यक्ष, रक्षा अध्ययन विभाग
शासकीय नागार्जुन स्नातकोत्तर विज्ञान महाविद्यालय
रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

सीपज मिश्रा
शोधार्थी, रक्षा अध्ययन विभाग
शासकीय नागार्जुन स्नातकोत्तर विज्ञान महाविद्यालय
रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

शोध सार

इंद्रावती राष्ट्रीय उद्यान, छत्तीसगढ़ के बीजापुर जिले में स्थित एक महत्वपूर्ण जैव विविधता क्षेत्र है। यह क्षेत्र प्राकृतिक संसाधनों की समृद्धता के लिए प्रसिद्ध है, लेकिन साथ ही यह माओवादी गतिविधियों से भी प्रभावित रहा है। घने जंगलों और दुर्गम भूगोल के कारण यह क्षेत्र माओवादियों के लिए एक सुरक्षित आश्रय स्थल बन चुका है, जिससे राज्य सरकार के लिए प्रशासनिक नियंत्रण स्थापित करना चुनौतीपूर्ण हो गया है। शोध में यह अध्ययन किया गया है कि किस प्रकार माओवादी संगठन स्थानीय जनजातीय समुदायों को प्रभावित करते हैं और किस प्रकार राज्य सरकार उनको मुख्यधारा में वापसी के लिए विभिन्न विकास एवं पुनर्वास योजनाएँ चला रही है। सुरक्षा बलों द्वारा चलाए जा रहे अभियानों, बुनियादी ढांचे के विकास, आत्मसमर्पण नीतियों और सामाजिक सुधार कार्यक्रमों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन किया गया है। यह शोध पत्र माओवाद और राज्य सरकार के बीच चल रहे संघर्ष का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

मुख्य शब्द

इंद्रावती राष्ट्रीय उद्यान, माओवाद, राज्य सरकार, नियद नेल्लानार योजना, आतंरिक सुरक्षा.

प्रस्तावना

अबूझमाड़ के बाद माओवादियों का कोर (आंतरिक) एवं सुरक्षित क्षेत्र इंद्रावती राष्ट्रीय उद्यान को माना जाता है। 2799 वर्ग किमी में विस्तृत इस राष्ट्रीय उद्यान में माओवादियों ने लगभग अपनी समानांतर व्यवस्था कायम कर रखी है एवं पुरे क्षेत्र में माओवादियों का अघोषित नियंत्रण है। यहाँ कई स्थानों पर माओवादियों के प्रशिक्षण शिविर भी संचालित होते रहें है। इंद्रावती राष्ट्रीय उद्यान में लगभग 75 वन ग्राम स्थित है। यह क्षेत्र माओवादियों की पश्चिम बस्तर डिवीजनल कमेटी का मुख्यालय माना जाता है और इसके अंतर्गत माओवादियों की चार एरिया कमेटी आती है। इसकी भौगोलिक सीमा एक ओर अबूझमाड़ और दूसरी ओर इंद्रावती नदी के उस पार महाराष्ट्र के गढ़चिरौली से लगी हुई है। महाराष्ट्र और अबूझमाड़ में जब भी सुरक्षा बलों द्वारा इन पर कार्यवाही की जाती है तब माओवादियों का दल राष्ट्रीय उद्यान एरिया में स्थानांतरित हो जाता है। यहाँ माओवादियों की नेशनल पार्क एरिया कमेटी, मद्देड़ एरिया कमेटी और पश्चिम बस्तर डिवीजनल कमेटी के अधिकांश माओवादी सक्रिय रहते हैं, यही कारण है कि

माओवादियों के लिए यह क्षेत्र अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस क्षेत्र को माओवादी मुक्त कराया बिना राज्य सरकार का माओवादी उन्मूलन अभियान फलीभूत नहीं हो सकता।

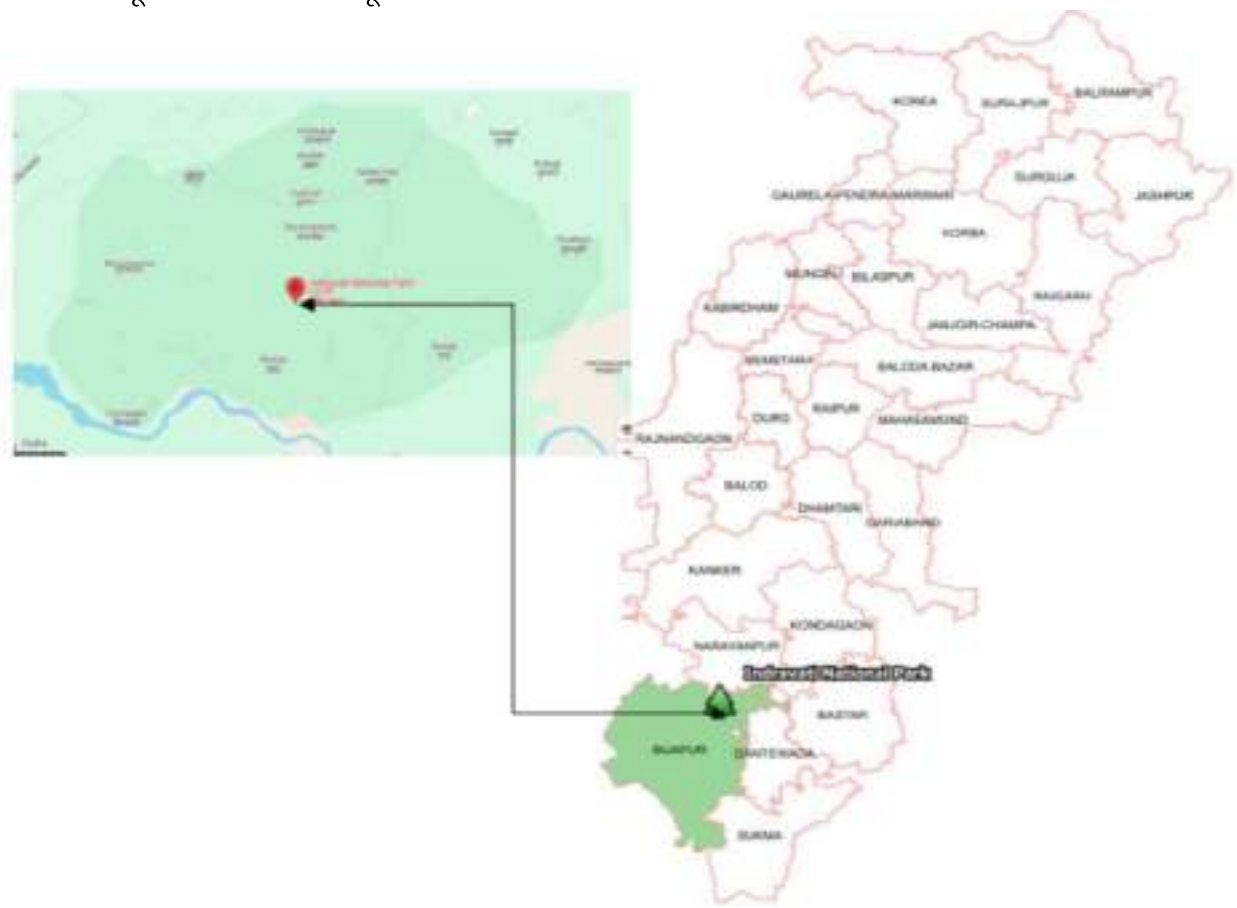

(इंद्रावती राष्ट्रीय उद्यान छत्तीसगढ़)

भौगोलिक स्थिति

इंद्रावती राष्ट्रीय उद्यान छत्तीसगढ़ के बीजापुर जिले में स्थित है। यह क्षेत्र 2799 वर्ग किमी में विस्तृत है, इस राष्ट्रीय उद्यान की भौगोलिक सीमा एक ओर अबूझमाड़ और दूसरी ओर इंद्रावती नदी के उस पार महाराष्ट्र के गड़चिरोली से लगी हुई है। इंद्रावती राष्ट्रीय उद्यान की सतह लहरदार पहाड़ी स्थलाकृति (क्यूसटा) से बनी है। इसकी समुद्र तल से ऊंचाई 177 से 599 मीटर तक है।

इंद्रावती राष्ट्रीय उद्यान

छत्तीसगढ़ राज्य प्रकृति की सुंदरता, पहाड़ों, नदियों और गुफाओं से संपन्न राज्य है। यह राष्ट्रीय उद्यान झरनों और जैव विविधता से भरा है, जो पर्यटन स्थल के रूप में प्रसिद्ध है। इंद्रावती राष्ट्रीय उद्यान को कुटरू राष्ट्रीय उद्यान भी कहा जाता है। बीजापुर जिले में स्थित यह राष्ट्रीय उद्यान छत्तीसगढ़ राज्य का एक मात्र 'टाइगर रिजर्व' है। पूर्व से पश्चिम की ओर बहती इंद्रावती नदी के नाम पर इस उद्यान का नाम रखा गया है, तथा महाराष्ट्र राज्य के साथ यह इस संरक्षित वन की उत्तरी सीमा बनाती है। इंद्रावती राष्ट्रीय उद्यान लगभग 2799.08 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्रफल में फैला हुआ है, जिसमे (1258.37 वर्ग किमी कोर (आंतरिक) क्षेत्र और 1540.71 वर्ग किमी बफर क्षेत्र) है। 1258.37 वर्ग किमी कोर (आंतरिक) क्षेत्र में 5 रेंज हैं, जिनके नाम हैं 1. कुटरू, 2. फरसेगढ़, 3. पासेवाड़ा, 4. सेंड्रा और 5. पिल्लूर।

इंद्रावती को 1981 में 'राष्ट्रीय उद्यान' का दर्जा दिया गया और इसे 1983 के दौरान भारत के सर्वाधिक प्रसिद्ध टाइगर रिजर्व बनाने के लिए 'प्रोजेक्ट टाइगर नामक योजना' के तहत टाइगर रिजर्व घोषित किया गया।

यह राष्ट्रीय उद्यान अपने विविध वन्य जीवन और पक्षी प्रजातियों के लिए जाना जाता है, जिनमें जंगली भैंसे और पहाड़ी मैना जैसी दुनिया की कुछ सबसे लुप्तप्राय प्रजातियां शामिल हैं।

माओवादियों की उपस्थिति

इंद्रावती राष्ट्रीय उद्यान का घना वन क्षेत्र माओवादियों के लिए प्रमुख आश्रय स्थल रहा है। यह राष्ट्रीय उद्यान घने जंगलो, समृद्ध जैव विविधता और दुर्लभ वन्यजीव के लिए प्रसिद्ध है, लेकिन पिछले कई दशकों से यह माओवादियों के लिए सुरक्षित ठिकाने के रूप में आश्रय का कार्य करता रहा है, जहाँ से वे छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र और PLGA) के लिए प्रशिक्षण केंद्र, हथियार निर्माण इकाइयाँ, और अन्य रणनीतिक सुविधाओं का केंद्र था।

(दंडकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी (डीकेएसजेडसी) के सदस्य)

इंद्रावती राष्ट्रीय उद्यान में माओवादी रणनीति एवं गतिविधियाँ

1. **माओवादी गढ़ के रूप में:** दुर्गम भूगोल और घने जंगल से परिपूर्ण इंद्रावती राष्ट्रीय उद्यान का भौगोलिक परिदृश्य माओवादियों को सुरक्षा प्रदान करता है, जिससे वे सुरक्षा बलों के खिलाफ गुरिल्ला युद्ध की रणनीति अपनाते हैं। माओवादी यहाँ अपने शिविर एवं हथियार डिपो स्थापित करते रहे है, जिसमे हथियार प्रशिक्षण से लेकर रणनीतिक बैठके की जाती है।
2. **संगठित तंत्रः** इस क्षेत्र में माओवादियों के बड़े संगठनात्मक ढांचे हैं, जिसमें जनताना सरकार (माओवाद प्रशासन), गुरिल्ला ट्रेनिंग कैंप, भूरा प्रचार और हथियार निर्माण इकाईयाँ शामिल हैं।
3. **स्थानीय जन पर प्रभावः** माओवादी स्थानीय जनजातियों के बीच सरकार के खिलाफ असंतोष फैलाकर उन्हें अपने समर्थन में बनाएँ रखने की कोशिश करते हैं, जिससे वे सरकारी नीतियों के विरोध करे। ये हमेशा स्थानीय जनजातियों को बलपूर्वक डराकार अपने संगठन में सम्मलित कर लेते है। माओवादियों एवं सुरक्षा बलों के बीच होने वाली झड़पो के कारण यहाँ का स्थानीय जन प्रभावित होता है।
4. **सुरक्षा बलों और सरकारी प्रतिष्ठानों पर हमलेः** माओवादी इस क्षेत्र में बारूदी सुरंग विस्फोट, घात लगाकर हमले, और पुलिस थानों पर हमलों जैसी गतिविधियों को अंजाम देते आए हैं। प्रायः सड़क निर्माण कार्यों एवं पुलों को नष्ट कर दिया जाता है ताकि सुरक्षा बल अंदर तक ना पहुँच सके।

छत्तीसगढ़ के बीजापुर जिले में माओवादी एवं प्रतिमाओवादी गतिविधियों में मौतें (2014–2024 के अनुसार)

Year	Incidents of Killing	Civilians	Security Forces	Terrorists / Insurgents / Extremists	Not Specified	Total
2014	21	10	08	19	0	**37**
2015	22	07	13	17	0	**37**
2016	35	05	08	41	0	**54**
2017	25	03	07	19	0	**29**
2018	33	07	12	50	0	**69**
2019	14	08	07	05	0	**20**
2020	29	15	09	16	0	**40**
2021	15	06	05	04	0	**15**
2022	24	14	04	14	0	**32**
2023	19	09	04	05	0	**18**
2024	49	34	08	60	0	**102**
Total	**286**	**118**	**85**	**250**	**0**	**453**

*(**Source:** ww.satp.org)*

5. **आपूर्ति केंद्रः** यह क्षेत्र माओवादियों के लिए रसद आपूर्ति, हथियार भंडारण और योजनाओं के क्रियान्वयन का केंद्र रहा है।

राज्य सरकार व सुरक्षा बलों की भूमिका

इंद्रावती राष्ट्रीय उद्यान माओवादी संघर्ष के केंद्र में रहा है, पिछले कुछ समय से हुए अभियानों में राज्य सरकार और सुरक्षा बलों को महत्वपूर्ण सफलताएँ मिली हैं। यदि विकास परियोजनाओं को सही तरीके से लागू किया जाए और स्थानीय लोगों का विश्वास जीता जाए, तो इस क्षेत्र को स्थायी रूप से माओवादी प्रभाव से मुक्त किया जा सकता है।

बीजापुर जिले के इंद्रावती राष्ट्रीय उद्यान व उसके समीपवर्ती क्षेत्र में वर्ष 2024 से 09.02.2025 तक हुए मुठभेड़ में मारे गये माओवादियों के आँकड़े

दिनांक	जिला / क्षेत्र / सीमा	मारे गये माओवादियों की संख्या
02.04.2024	करचौली (बीजापुर)	13
29.04.2024	टेकमेटा (नारायणपुर)	10
10.05.2024	पीड़िया (बीजापुर)	12
23.05.2024	रेकावाया (अबूझमाढ़)	08
08.06.2024	आमदई एरिया (अबूझमाढ़)	06
15.06.2024	अबूझमाढ़	08
03.09.2024	दंतेवाड़ा–बीजापुर सीमा	09
05.09.2024	छत्तीसगढ़–तेलंगाना सीमा	06
05.10.2024	थुलथुली (अबूझमाढ़)	38
05.12.2024	छत्तीसगढ़–तेलंगाना सीमा	06
12.12.2024	अबूझमाढ़ फॉरेस्ट	07
09.02.2025	इंद्रावती राष्ट्रीय उद्यान (बीजापुर)	31

(स्त्रोतः दिनांक 30.12.2024 को पत्रिका दैनिक सामाचार पत्र के रायपुर संस्करण में प्रकाशित)

सुरक्षा बलों की रणनीति एवं अभियान

ग्रीन हंट और अन्य अभियानो के माध्यम से स्थानीय पुलिस, सीआरपीफ और विशेष सुरक्षाबल(डीआरजी, एसटीफ) मिलकर समन्वित कार्यवाही द्वारा माओवादियों के प्रभाव को इस क्षेत्र में सीमित किया है। बीजापुर जिले में बीते 1 साल में 48 अभियान लॉन्च हुए जिनमें 58 माओवादी मारे गए। माओवादियों के सुरक्षित जोन जिड़पल्ली में कैंप खुलने के साथ साथ कोर एरिया में 12 नए कैंप खोले गए। जिले में हुए कुल 48 मुठभेड़ में कुल 56 हथियार मिले। जिसमे मुख्य रूप से एसएलआर, एलएमजी, एके 47, इंसास जैसे हथियार बरामद किए गए हैं। साल 2024 में सुरक्षा बलों को सबसे कम नुकसान हुआ है। प्रति माओवादी कार्यवाहियो में 6 जवानो ने अपना सर्वोच्च बलिदान दिया। माओवादी हमलों में अब तक 33 स्थानीय नागरिकों की मौत हुई है, जिसमे 5 लोगो की मौंत आईडी ब्लास्ट से व 28 को हथियार से मारा गया है। सुरक्षा बलों का दबाव लगातार बढ़ने के बीच बीजापुर जिले में अब तक 502 माओवादियों को गिरफ्तार किया है, वहीं 189 माओवादीयों ने आत्मसमर्पण किया है।

सुरक्षा बल द्वारा 2025 की सबसे बड़ी सफलता

फरवरी 2025 में, सुरक्षा बलों ने इंद्रावती राष्ट्रीय उद्यान में एक बड़े अभियान के दौरान 31 माओवादियों को मार गिराया, जिसमें 11 महिलाएँ भी शामिल थीं। इस मुठभेड़ में दो सुरक्षा कर्मी भी शहीद हुए। इस कार्यवाही के बाद, महाराष्ट्र के गढ़चिरौली जिले में सुरक्षा बलों ने सीमावर्ती क्षेत्रों में निगरानी बढ़ा दी है ताकि माओवादी छत्तीसगढ़ से भागकर महाराष्ट्र में प्रवेश न कर सकें।

राज्य सरकार की रणनीति एवं योजनाएँ

1. सुरक्षा बलों की तैनाती

बीजापुर, छत्तीसगढ़ में माओवाद से निपटने के लिए विभिन्न सुरक्षा बल तैनात हैं। इनमें जिला रिजर्व गार्ड, विशेष कार्य बल, बस्तर फाइटर्स, केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल, कोबरा बटालियन, सीमा सुरक्षा बल, भारत–तिब्बत सीमा पुलिस, सशस्त्र सीमा बल और छत्तीसगढ़ सशस्त्र बल शामिल हैं।

गुरील्ला युद्ध में प्रशिक्षित विशेष टुकड़ियाँ माओवादियों के खिलाफ अभियान चला रही हैं।

2. आधारभूत संरचना का विकास

राज्य सरकार सड़कों, पुलों और मोबाइल टावरों का निर्माण करा रही है ताकि सरकारी पहुँच को बढ़ाया जा सके और क्षेत्र को मुख्यधारा से जोड़ने में सरलता बनायीं जा सकें।

बीजापुर जिले में तर्रेम से पामड़ तक 42 किमी और सिलगेर से पूवर्ती तक 51 किमी की सड़क बीआरओ बना रही है। इसके आलावा एलमगुड़ा एवं कोंडापाली जैसे अति माओवादी प्रभावित क्षेत्रों में सड़के बनाई जाएगी।

बीजापुर जिले में इस वर्ष बड़े पुलों का भी निर्माण हुआ है, जिसमे पामेड़ में चिंतावगु नदी पर पूंडरी में, नुगुर में और महाराष्ट्र को जोड़ने वाला बेदरे पुल बना है।

अस्पताल, स्कूल और राशन की दुकानों को अधिक सुलभ बनाने का प्रयास किया जा रहा है।

3. पुनर्वास और आत्मसमर्पण नीति

छत्तीसगढ़ सरकार ने माओवादियों के आत्मसमर्पण और पुनर्वास के लिए विशेष नीतियाँ लागू की हैं, जिनका उद्देश्य उन्हें हिंसा का मार्ग छोड़कर समाज की मुख्यधारा में शामिल करना है। ''लोन वर्राटू'' (घर वापसी) जैसी योजना के तहत माओवादियों को आत्मसमर्पण करने के लिए प्रेरित किया जा रहा है।

पुनर्वास कार्यक्रमों के तहत आत्मसमर्पण करने वाले माओवादियों को छत्तीसगढ़ सरकार के तहत आर्थिक सहायता, आवास, और व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है, जिससे वे समाज में सम्मानजनक जीवन जी सकें।

4. नए सुरक्षा कैंपों की स्थापना

बीजापुर और इंद्रावती के आसपास के क्षेत्रों में सुरक्षा बलों की स्थायी उपस्थिति के लिए नए कैंप स्थापित किए गए हैं।

5. माओवाद मुक्त करने की लक्ष्य

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने घोषणा की है कि केंद्र और छत्तीसगढ़ राज्य सरकारें मिलकर 31 मार्च 2026 तक राज्य और देश से माओवाद को पूर्णतः समाप्त करने के लिए प्रतिबद्ध रहेगी।

नियद नेल्लानार योजना

इसका अर्थ है ''आपका अच्छा गांव'' छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा माओवाद प्रभावित क्षेत्रों के समग्र विकास के लिए शुरू की गई एक महत्वपूर्ण पहल है। इस योजना का उद्देश्य सुरक्षा कैंपों के 5 किलोमीटर की परिधि में स्थित गांवों में बुनियादी सुविधाओं का विकास करना और वहाँ के निवासियों को सरकारी योजनाओं का लाभ प्रदान करना है।

बीजापुर जिले में इस योजना के लाभ

बुनियादी सुविधाओं का विकास

इस योजना के अंतर्गत बीजापुर जिले में 19 कैंप बनाएँ जा रहें है। इन सुरक्षा कैंपों के आसपास के गांवों में सड़कों, बिजली, पानी, स्वच्छता, शिक्षा और स्वास्थ्य जैसी 25 से अधिक बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध कराई जा रही हैं।

आवासीय विद्यालयों की स्थापना

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के लिए आवासीय विद्यालय स्थापित किए जा रहे हैं, जिससे बच्चों को बेहतर शिक्षा और रहने की सुविधा मिल सके।

वनाधिकार पत्र वितरण

पात्र निवासियों को व्यक्तिगत और सामुदायिक वनाधिकार पत्र वितरित किए जा रहे हैं, जिससे वे अपने भूमि अधिकारों को सुनिश्चित कर सकें।

आजीविका संवर्धन

कृषि, पशुपालन, लघु उद्योगों और अन्य आजीविका गतिविधियों को बढ़ावा देकर ग्रामीणों की आर्थिक स्थिति में सुधार किया जा रहा है।

सामाजिक सुरक्षा योजनाओं का लाभ

ग्रामीणों को विभिन्न सामाजिक सुरक्षा योजनाओं का लाभ प्रदान किया जा रहा है, जिससे उनके जीवन स्तर में सुधार हो सके।

नियद नेल्लानार योजना बीजापुर जिले के माओवाद प्रभावित क्षेत्रों में शांति, सुरक्षा और विकास को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

संघर्ष का परिणाम

माओवादियों की भर्ती में कमी पिछले कुछ वर्षों में कई माओवादी आत्मसमर्पण कर चुके हैं, जिससे उनकी ताकत कमजोर हो रही हैं। बढ़ते सुरक्षा अभियान लगातार अभियानों के कारण माओवादियों को अपने पारंपरिक ठिकानों को छोड़कर अन्य इलाकों में भागने के लिए मजबूर होना पड़ा हैं। स्थानीय जनता में बदलाव सरकार की योजनाओं और सुरक्षा बलों के अभियानों के कारण ग्रामीण जनता अब माओवादियों का समर्थन करने से पीछे हट रहे हैं।

निष्कर्ष

इंद्रावती राष्ट्रीय उद्यान एक महत्वपूर्ण पारिस्थितिकी तंत्र है, लेकिन माओवादी गतिविधियों के कारण यह संघर्ष का क्षेत्र बना हुआ है। राज्य सरकार लगातार सुरक्षा अभियान और विकास परियोजनाओं के माध्यम से माओवाद के प्रभाव को कम करने की कोशिश कर रही है।

स्थायी शांति के लिए सरकार को सुरक्षा बलों की कार्यवाही के साथ–साथ शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और बुनियादी सुविधाओं के विकास को प्राथमिकता देनी होगी। स्थानीय समुदायों की भागीदारी बढ़ाकर, उनके विश्वास को जीतकर और उन्हें आर्थिक रूप से सशक्त बनाकर ही इस समस्या का दीर्घकालिक समाधान निकाला जा सकता है।

संदर्भ सूची

1. https://cgwcd.gov.in/, Accessed on 20/01/25.
2. https://www.forest.cg.gov.in/WildLife/English/IndraTs.htm, Accessed on 21/01/25.
3. https://navbharattimes.indiatimes.com/state/chhattisgarh/other-cities/how-security-forces-got-success-anti-naxal-operation-in-chhattisgarh-bijapur-indravati-national-park-know-amit-shah-plan/articleshow/118138097.cms?utm_source=chatgpt.com, Accessed on 22/01/25.
4. https://navbharattimes.indiatimes.com/state/maharashtra/nagpur/abujmarh-maoists-lose-second-safe-citadel-in-indravati-national-park-maharashtra-gadchiroli/articleshow/118135792.cms, Accessed on 22/01/25.
5. https://sanmarg.in/top-news/bijapur-anti-naxal-mission, Accessed on 22/01/25.
6. https://satp.org/datasheet/district/india-maoistinsurgency-chhattisgar, Accessed on 20/01/25.
7. https://unacademy.com/content/ssc/study-material/general-awareness/indravati-national-park/, Accessed on 20/01/25.
8. पांडेय, गिरीश कांत; कड़वे, प्रवीण कुमार; ठाकुर, तोरण सिंह (2024) बीजापुर क्षेत्र में माओवादी जनाधार का विश्लेषणात्मक अध्ययन, *अमोघवार्ता,* वाल्यूम 03, इश्यू 03, पृ. 1–7, दिसम्बर 2023 से फरवरी 2024, Accessed on 20/01/25.
9. दैनिक सामाचार पत्र ''पत्रिका'' के रायपुर संस्करण में प्रकाशित ''इंद्रावती नेशनल पार्क में बड़ी मुठभेड़'', दिनांक 10.02.2025, Accessed on 21/01/25.
10. दैनिक सामाचार पत्र ''पत्रिका'' के रायपुर संस्करण में प्रकाशित ''अबूझमाड़ में नक्सलियों को घेरने कैम्प खोल पुलिस ने बढ़ाया कदम'', दिनांक 05.03.2024, Accessed on 22/01/25.

——==00==——